## प्लेटो के चिंतन में दार्शनिक राजा का विचार

प्लेटो अपनी पुस्तक 'Republic' में कहता है कि आदर्श राज्य वास्तविकता के धरातल पर तभी उतर सकता है जब शासन की बागडोर निःस्वार्थ दार्शनिकों के हाथ में होगी। इसी संकल्पना को ध्यान में रखते हुए वह राज्य की पदसोपानीय व्यवस्था में दार्शनिकों को उच्च शिखर पर नियुक्त करता है। दार्शनिक राजा का सिद्धांत प्लेटो के चिंतन में मौलिक स्थान रखता है। प्लेटो स्वयं लिखता है कि जब तक दार्शनिक राजा न बन जाए या विश्व के राजाओं में दर्शन का गुण न आ जाए तब तक नगर राज्य बुराइयों से मुक्त नहीं हो सकते।

प्लेटो अभिभावक वर्ग के अन्तर्गत शासक वर्ग तथा सैनिक वर्ग इन दोनों को स्थान देता है लेकिन जब बात विवेक की आती है तब सैनिक वर्ग विवेक की तुलना में उत्साह अधिक होने के कारण सहायक की भूमिका में चला जाता है और विवेक से परिपूर्ण दार्शनिक उच्च स्तर की जिम्मेदारियों के निर्वहन हेतु उच्च स्थिति प्राप्त कर लेता है। प्लेटो अपने चिंतन में विवेक को और अधिक विस्तारित करते हुए इसके दो गुण बताता है प्रथम- विवेक ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता है इससे प्रेरित व्यक्ति ज्ञान को अंगीकार करता है वहीं दूसरी तरफ यह व्यक्ति को स्नेह भी सीखाता है। अतः विवेक से परिपूर्ण दार्शनिक शासक एक तरफ ज्ञान से परिपूर्ण तो है ही वहीं दूसरी तरफ वह स्नेहशील भी है। दार्शनिक शासक के लिए साम्यवाद का अवरोध भी है जिसके कारण वह स्वर्ण एवं सुंदरी जैसे सांसारिक मोह बंधनों से मुक्त होकर निःस्वार्थ एवं कर्तव्यपरायण होकर स्वयं के लिए निर्धारित कर्तव्यों का निर्वहन करता है। प्लेटो के चिंतन में दार्शनिक शासक एक उत्कृष्ट आत्मा के लिए वांछित सभी गुणों से युक्त है। वह Idea of Good का सम्पूर्ण प्रदर्शन करता है। उसकी आत्मा में न्याय, सौन्दर्य, संयम, स्नेहशीलता, परम सत्य सब कुछ विद्यमान है।

Scanned with CamScanner

प्लेटो ने दार्शनिक शासक के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखा है कि एक राज्य के भीतर मनुष्य की चिन्ताओं और कष्टों का प्रमुख कारण यह है कि उसके मार्ग-दर्शक और नेता ज्ञानी और विवेकशील नहीं है। राज्य रूपी नौका को खेने के लिए एक ज्ञानी, कुशल, निःस्वार्थ एवं कर्तव्यपरायण नाविक की आवश्यकता है जो दार्शनिक शासक के अतिरिक्त कोई नहीं हो सकता है।

दार्शनिक शासक एवं राज्य की विधियों के संबंध में भी एक विमर्श देखने को मिलता है। आदर्श राज्य में विधियों का प्रमुख स्रोत स्वयं दार्शनिक शासक होगा वह स्वयं किसी विधि के अधीन नहीं होगा न ही किसी विधि द्वारा मर्यादित होगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि वह (दार्शनिक शासक) शुभ का परम ज्ञाता है तथा कानून की बजाय स्वयं की अन्तःप्रेरणा से संचालित होगा तथा उसी के प्रति उत्तरदायी होगा। इस प्रकार के शासक से समाज के अहित होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती, क्योंकि वह समस्त गुणों का सिन्धु तथा राज्य के प्रति उत्कृष्ट श्रद्धा से ओत-प्रोत है। प्लेटो उसे विवेक का प्रेमी तथा नगर-राज्य का सर्वोत्कृष्ट रक्षक मानता है।

बार्कर ने दार्शनिक राजा की चार मर्यादाएं बताई हैं जो निम्नलिखित हैं:-

1⇒ दार्शनिक शासक को अपने आदर्श राज्य में निर्धनता एवं संपन्नता को बढ़ने नहीं देना चाहिए क्योंकि अगर निर्धनता बढ़ेगी तो राज्य संघर्षों एवं अपराधों का घर बन जाएगा वहीं अगर संपन्नता बढ़ेगी तो आलस्य एवं भोगवृत्ति का जन्म होगा इसलिए इन दोनों की अति से बचना चाहिए।

2⇒ राज्य के आकार एवं जनसंख्या पर भी पर्याप्त नियंत्रण होना चाहिए जिससे कि व्यवस्था सुचारु ढंग से संचालित हो सके। नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न न हो।

Scanned with CamScanner

3:⇒ न्याय व्यवस्था का आयोजन इस प्रकार होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति अपना व्यवसाय नियमित रूप से करता रहे।

4:⇒ प्रचलित शिक्षा पद्धति में फेर-बदल नहीं करना चाहिए।

## दार्शनिक शासक की आलोचना

विभिन्न आधारों एवं दृष्टिकोणों से दार्शनिक शासक की आलोचना प्रस्तुत की गई है जो निम्नलिखित है :-

1⇒ आदर्श राज्य एवं दार्शनिक शासक की अवधारणा कल्पना पर आधारित है स्वयं प्लेटो अपनी पुस्तक 'The Laws' में इस बात को स्वीकार करता है।

2:⇒ दार्शनिक शासक पर साम्यवाद का सिद्धांत लागू करके उसे संपत्ति एवं परिवार से वंचित कर देने से उसकी कार्य प्रेरणा नष्ट हो जाएगी और वह पूरे मनोयोग से कार्य नहीं कर पाएगा।

3:⇒ मनुष्य की आत्मा का त्रिवर्गीय विभाजन कर शासक वर्ग की स्थापना करना यथार्थ से परे है।

4:⇒ प्लेटो अपने आदर्श राज्य में सबकुछ दार्शनिक शासक के भरोसे छोड़ देता है जो नवीन निरंकुशता को जन्म देने वाला है।

5:⇒ प्लेटो दार्शनिक शासक के जीवन को विभिन्न प्रतिबंधों के आधार पर नीरस एवं उदासीन बना देता है जो स्वयं शासक एवं राज्य के लिए उचित नहीं है।

Scanned with CamScanner